BSKC – 105

बी.ए. आनर्स (संस्कृत) कार्यक्रम

(बी.ए.एस.के.एच.)

सत्रीय कार्य

(जनवरी, **2024** एवं जुलाई, **2024** सत्रों के लिए)

BSKC – 105 लौकिक संस्कृत साहित्य (नाटक)

मानविकी विद्यापीठ

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मैदान गढ़ी, नई दिल्ली- **110068**

बी.ए. आनर्स (संस्कृत) कार्यक्रम

संस्कृत-कोर पाठ्यक्रम

सत्रीय कार्य (2024)

पाठ्यक्रम कोड : **BASKH/BSKC -105/2024**

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (**TMA**) है। सत्रीय कार्य के लिए **100** अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जायेंगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िये :

1.) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिए।

2.) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता : .....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : .....

सत्रीय कार्य कोड : .....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : .....

दिनाँक : .....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययन: सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाईयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ विशेष बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढ़ग से व्यवस्थित कीजिए।

2. अभ्यास: उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिन्दु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबन्धात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरम्भ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढ़ग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढ़ग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियों न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. प्रस्तुति: जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ, तो उसे साफ़ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट: याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है, अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ:

जनवरी, 2024 सत्र के लिए : 30 सितम्बर, 2024

जुलाई, 2024 सत्र के लिए : 31 मार्च, 2025

सत्रीय कार्य : **BSKC – 105 लौकिक संस्कृत साहित्य (नाटक)**

पाठ्यक्रम कोड **BSKC – 105**

पाठ्यक्रम शीर्षक : **लौकिक संस्कृत साहित्य (नाटक)**

सत्रीय कार्य : **BSKC – 105/TMA/2024**

पूर्णांक : 100

नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : -

(क) व्याख्या आधारित प्रश्न : - **10X3=30**

1. अधोलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए: -

(अ) आरब्धे पटहे स्थिते गुरुजने भद्रासने लङ्घिते

स्कन्धोच्चारणनम्यमानवदनप्रच्योतितोये घटे ।

राजाहूय विसर्जिते मयि जनो धैर्येण मे विस्मितः

स्वः पुत्रः कुरुते पितुर्यदि वचः कस्तत्र भो ! विस्मयः ?

अथवा

अयशसि यदि लोभः कीर्तयित्वा किमस्मान्

किमु नृपफलतर्षः किं नरेन्द्रो न दद्यात् ।

अथ तु नृपतिमातेत्येष शब्दस्तवेष्टो

वदतु भवति ! सत्यं किं तवार्यो न पुत्रः ? ॥

(ब) विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा

तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम् ।

स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्

कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव ।।

अथवा

सङ्कल्पितं प्रथममेव मया तवार्थे

भर्तारमात्मसदृशं सुकृतैर्गता त्वम् ।

चूतेन संश्रितवती नवमालिकेय-

मस्यामहं त्वयि च सम्प्रति वीतचिन्तः ॥

(ग) वहति जलमियं पिनष्टि गन्धानियमियमुद्गथते स्रजो विचित्राः ।

मुसलमिदमियञ्च पातकाले मुहुरनुयाति कलेन हुङ्कृतेन ॥

अथवा

चाणक्येनाकरुणेन सहसा शब्दायितस्यापि जनस्य ।

निर्दोषस्यापि शङ्का, किं पुनर्मम जातदोषस्य ? ॥

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न : - **5X5=25**

2. संस्कृत नाट्य साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

3. समवकार रूपक को लक्षण सहित स्पष्ट कीजिए ।

4. 'प्रतिमानाटकम्' नाटक के नामकरण की सार्थकता को स्पष्ट कीजिए ।

5. 'काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला' इस उक्ति को स्पष्ट कीजिए ।

6. मुद्राराक्षसम् नाटक के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए ।

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न : -

7. मुद्राराक्षस नाटक के नामकरण एवं कथासार का सविस्तार विवेचन कीजिए । **10**

8. संस्कृत नाटकों की उत्पत्ति सम्बन्धी भारतीय मतों का विस्तृत वर्णन कीजिए। **10**

9. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक की कथा पर प्रकाश डालिए। **10**

10. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए: - **5X3=15**

(अ) नान्दी (ब) अङ्कास्य

(स) विष्कम्भक (द) अपवारित